

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 30, आध्यात्मिक युद्ध, इफिसियों 6:10-21

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह उनका अंतिम व्याख्यान है, आध्यात्मिक युद्ध पर व्याख्यान 30, इफिसियों 6:10-21।

जेल पत्रों पर व्याख्यानों पर हमारे बाइबिल अध्ययन व्याख्यान पर अंतिम व्याख्यान में आपका स्वागत है।

आप जानते हैं कि पिछले कुछ व्याख्यानों में, हम इफिसियों पर विचार कर रहे हैं। और इफिसियों पर समापन करते हुए, एक पुस्तक जिसका अध्ययन करने में मैंने अपना काफी जीवन बिताया है, मुझे लगता है कि यह वास्तव में अच्छा होगा कि मैं आपको याद दिलाऊँ कि हम इफिसियों के अध्ययन में कितनी दूर आ गए हैं। फिर, हम अध्याय 6 में, श्लोक 10 से पुस्तक के अंत तक आध्यात्मिक युद्ध पर चर्चा करेंगे।

जब हमने इफिसियों की शुरुआत की, तो मैंने आपको याद दिलाया कि यह पुस्तक इफिसुस और उसके आस-पास के इलाकों में रहने वाले ईसाइयों के लिए लिखी गई थी। मैंने आपका ध्यान उस समय के लोगों के विश्वदृष्टिकोण के एक अभिन्न अंग की ओर आकर्षित किया, विशेष रूप से उनके विश्वदृष्टिकोण के बारे में जो आध्यात्मिक प्राणियों के कार्य से संबंधित है। जैसा कि आपको याद होगा, मैंने आपको शुरू में ही याद दिलाया था कि वहाँ लगभग 50 मूर्तिपूजक मंदिर थे।

कम से कम आधुनिक पुरातत्वविदों ने हमें लगभग 50 मूर्तिपूजक मंदिरों के अवशेष खोजने में मदद की है जो पॉल द्वारा यह पत्र लिखे जाने के समय तक खड़े होंगे। लोग धार्मिक थे। यह एक व्यापारिक शहर था।

और हमारे यहाँ बहुत से स्थानों से लोग आते-जाते हैं। और इसलिए, जातीय संरचना यहूदियों और गैर-यहूदियों से बनी थी। और गैर-यहूदी रोमन या यूनानी हो सकते हैं।

जब हमने पत्र लिखना शुरू किया, तो मैंने ध्यान आकर्षित किया कि पॉल इस पृष्ठभूमि को देखते हुए इसे कैसे संभालेगा, जिसे मैं एक सांस रोककर प्रार्थना कहता हूँ, जैसा कि आपको याद होगा। धन्य है परमेश्वर, जिसने हमें स्वर्गीय स्थानों में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया है। दूसरे शब्दों में, धन्य है परमेश्वर, जिसने हमें इस हद तक आशीर्वाद दिया है कि हमें शहर के किसी भी देवता, किसी भी जादुई शक्ति, या ज्योतिषियों से किसी भी आध्यात्मिक आशीर्वाद की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने जो किया है।

उन्होंने कहा, परमेश्वर ने हमें चुना है। उन्होंने हमें छुड़ाया है, उन्होंने कहा। और उन्होंने हमें पवित्र आत्मा से मुहरबंद किया है।

चर्च के लिए प्रार्थना करते हुए, और अध्याय 1 के अंत में, पॉल वास्तव में इसे खोलता है, और फिर इसके अंत में, उसने कहा कि वह प्रार्थना करता है कि वे मजबूत हो जाएं। और जिन क्षेत्रों में उन्होंने कहा कि उन्हें मजबूत किया जा सकता है, जो अध्याय 2 से जुड़ा हुआ है, वह यह था कि उन्हें ईश्वर की शक्ति से मजबूत किया जा सकता है। और अगर वे इस शक्ति के बारे में नहीं जानते थे, तो यह वह शक्ति थी जो काम कर रही थी।

यह वह शक्ति थी जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया। यह वह शक्ति है जिसने उसे जीवित किया और उसे सभी प्रधानताओं और शक्तियों से ऊपर उठाया ताकि अध्याय 1 के अंत में, उसने घोषणा की है कि मसीह जी उठा है और उसकी शक्ति हर कल्पनीय शक्ति से बढ़कर है, यहाँ तक कि जादुई शक्तियों सहित, हर नाम का उपयोग करके। कि मसीह के पास उस समय की कल्पना की जा सकने वाली हर आध्यात्मिक शक्ति पर शक्ति है।

और उसने अध्याय 1 में पद 23 को समाप्त करते हुए कहा कि उसने यह कलीसिया के लिए किया। दूसरे शब्दों में, कलीसिया विजयी स्थिति में है। अध्याय 2 में, पौलुस ने मसीह के बारे में जो कुछ कहा था, उसे आगे बढ़ाते हुए, विश्वासियों को यह दिखाने के लिए लाया है कि अविश्वासियों के रूप में वे कहाँ थे और अब मसीह में वे कहाँ हैं।

उसने कहा कि तुम जानते हो कि तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे। उस दुनिया में, तुम आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा नियंत्रित थे, विशेष रूप से हवा की शक्ति के राजकुमार द्वारा। तुम वास्तव में अपने शरीर और अपने मन की इच्छाओं का पालन कर रहे थे।

आप इस दुनिया के मार्ग का अनुसरण कर रहे थे, और फिर वह उस महान कथन के साथ बाहर चला गया। लेकिन परमेश्वर, जो अपने महान प्रेम के कारण दया में समृद्ध है, जो उसने हमसे प्रेम किया, हमें बचाया। और जैसा कि आप स्पष्ट रूप से याद करते हैं, शायद मुझे वे छंद पसंद हैं क्योंकि वे मेरे साथ रहते हैं।

पद 8, क्योंकि अनुग्रह ही से तुम विश्वास के द्वारा बचाए गए हो। और यह इस बात को प्रमाणित करता है कि यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे हम घमंड करने से रोक सकें। यह वही है जो परमेश्वर ने किया है।

और जैसे ही उसने अपनी बात समाप्त की, उसने चर्च का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि परमेश्वर ने हमें जहाँ से लिया है, वहाँ कोई भी पुण्य नहीं है। हम यह नहीं कह सकते कि हमने कुछ भी पुण्य किया है। और इसलिए अब यहूदियों और गैर-यहूदियों को एक साथ आना होगा।

और इसलिए, उन्होंने अध्याय 2, श्लोक 11 से आगे, चर्च में होने वाली एकता को संबोधित किया। यह वह एकता है जो मसीह लेकर आए हैं। यह वह एकता है जिसने शत्रुता की विभाजनकारी दीवार को तोड़ दिया है और हम सभी को विश्वास के घराने का सदस्य बना दिया है।

अध्याय 3 में, वह आगे बताएगा कि उसे क्या विशेषाधिकार दिया गया है। परमेश्वर के इस महान कार्य ने यहूदियों और अन्यजातियों को एक साथ लाया, और उसे, सबसे छोटे से छोटे को, इस

संदेश, परमेश्वर के रहस्य की घोषणा करने का विशेषाधिकार दिया गया है। आपको याद होगा कि कैसे उसने फिर से वहाँ मध्यस्थता में प्रार्थना की और इन सभी चार-आयामी चीजों के बारे में बात की, जिनके बारे में हम बात करते हैं और उसके लिए वह महान स्तुति, जो हमारी कल्पना से कहीं अधिक करने में सक्षम है।

अब, इससे पहले कि मैं अध्याय 4 पर एक संक्षिप्त टिप्पणी करूँ और उस पर आगे बढ़ूँ जहाँ मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, मैंने यह सब आपके लिए यह समझने के लिए किया है कि पौलुस ने अध्याय 1 से 3 में आध्यात्मिक प्राणियों की भूमिका कैसे निभाई है। यह परमेश्वर है जो आपको छुड़ा रहा है और इसलिए कोई भी आध्यात्मिक शक्ति आपके विरुद्ध नहीं उठ सकती। मसीह ने उनकी आध्यात्मिक शक्तियों को हरा दिया है। उसने यहूदियों और अन्यजातियों को मसीह यीशु में एक कर दिया है, और उसने पौलुस को यह अनुग्रह दिया है कि वह इस रहस्य को बाकी दुनिया तक पहुँचाए, और यह वह परमेश्वर है जो हमारी सोच या कल्पना से कहीं अधिक करने में सक्षम है, जो उसने अपने लोगों के लिए किया है, उसके लिए हमेशा-हमेशा के लिए उसकी महिमा हो।

इसी आधार पर, उन्होंने अध्याय 4 की शुरुआत इसलिए से की है। इसलिए, उन्होंने सदस्यों या पाठकों को आत्मा में एकता बनाए रखने की चुनौती दी है। उन्होंने उनसे एकता बनाने या उसे बढ़ावा देने के लिए नहीं कहा।

नहीं, वह कहता है कि उन्हें उत्सुकता से एकता बनाए रखनी चाहिए क्योंकि एकता पहले से ही परमेश्वर द्वारा निर्मित की गई है, और उन्हें जो करने की ज़रूरत है वह इसे बरकरार रखना है। यह उस एकता को बनाए रखने के लिए है जिसने उन्हें याद दिलाया कि कुछ लोगों को सेवा के लिए बहुत सारे आध्यात्मिक उपहार दिए गए हैं ताकि संतों को सेवा के कार्यों के लिए तैयार किया जा सके। वह अन्यजातियों की ओर मुड़ सकता है और उन्हें बता सकता है कि आपको अब अन्यजातियों की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए।

आप विशेष हैं। अपनी सोच बदलें। अपना व्यवहार बदलें।

ऐसे जीवन जिँ जिससे परमेश्वर की महिमा हो। ऐसा जीवन जिँ जो दिखाए कि आप परमेश्वर की छवि हैं, और वह उन्हें कई मोर्चों पर चुनौती देगा, जिन पर हमने पिछले चार व्याख्यानो में चर्चा की थी। उनकी बोली, उनका यौन व्यवहार, उनकी कार्य नीति, और वे गुण जिन्हें उनमें विकसित करने की आवश्यकता है।

अध्याय 5 में, वह सीधे तौर पर पहचान पर जोर देता है। वे परमेश्वर के बच्चे हैं जो प्रिय हैं और उन्हें ऐसे लोगों की तरह जीने की ज़रूरत है जिन्हें प्यार किया गया है। यहाँ फिर से आध्यात्मिक अस्तित्व परमेश्वर पर ध्यान दें।

यहाँ परमेश्वर की आत्मा काम कर रही है। यीशु मसीह ही वह माध्यम है जिसके माध्यम से यह सब हो रहा है। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने दिल में क्रोध को जगह देकर शैतान के लिए जगह नहीं बनानी चाहिए।

वह यहाँ तक कहते हैं कि उन्हें अपनी बातों से पवित्र आत्मा को दुखी नहीं करना चाहिए। बल्कि उन्हें प्रकाश के प्यारे, प्यारे बच्चों की तरह जीना चाहिए जो जानते हैं कि सच्चा प्यार क्या है और कृतज्ञता से भरे हुए हैं। वह आगे कहते हैं, फिर, मूर्खों की तरह मत जियो बल्कि बुद्धिमानों की तरह जियो।

शराब के नशे में मत डूबो, जो व्यभिचार की ओर ले जाता है, बल्कि आत्मा से भर जाओ। आत्मा से भर जाने से तुम्हारे अंदर ये सभी गुण आ जाते हैं। एक पत्नी के रूप में, अपने पतियों के अधीन रहो।

पति अपनी पत्नियों से प्यार करते हैं। अपने आप को उनके हवाले कर दो। अगर तुम सच में अपने शरीर से प्यार करते हो, तो उनसे वैसे ही प्यार करो जैसे तुम अपने शरीर से करते हो।

बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करें। माता-पिता, अपने बच्चों के साथ नरमी से पेश आएँ। दास अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करें।

स्वामियों, अपने दासों की देखभाल करने के बारे में सावधान रहो, क्योंकि एक बड़ा स्वामी है जिसके प्रति तुम सब जवाबदेह हो। और फिर पौलुस उस अंश पर आता है जिस पर हम विचार कर रहे हैं। वह इस अंश, अध्याय 6, श्लोक 10 से शुरू करता है।

अन्त में, प्रभु में और उसकी शक्ति की शक्ति में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध मांस और लोहू से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस वर्तमान अन्धकार पर अधिकार रखनेवाली शक्तियों से, और आकाश में दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है।

इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिनों का सामना कर सको। और खड़े रहने के लिये सब कुछ करके, सत्य की कमर बांधकर, और पांवों में धार्मिकता की झिलम पहिनकर, और मेल के सुसमाचार की तैयारी की जूती पहिनकर दृढ़ रहो। और हर परिस्थिति में विश्वास की ढाल उठा लो जिस से तुम दुष्टों की सब जलती हुई मृत्युओं को बुझा सको।

और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो, और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो। इसी लिये जागते और लगे रहो।

संतों के लिए और मेरे लिए भी प्रार्थना करते हुए कि मुझे अपने मुंह को खोलने में, सुसमाचार के रहस्य की घोषणा करने के लिए साहसपूर्वक अपना मुंह खोलने में शब्द दिए जाएं, जिसके लिए मैं जंजीरों में बंधा हुआ राजदूत हूँ और मैं इसे साहसपूर्वक घोषित कर सकता हूँ जैसा कि मुझे करना चाहिए। इस सत्र में, हम आध्यात्मिक युद्ध के कुछ आयामों को संक्षेप में देखते हैं। यहाँ पॉल जो कर रहा है वह अंत में शब्द से शुरू करना है।

मैं अब इसे समाप्त कर रहा हूँ। विद्वानों के पास अब यह बड़ा लैटिन शब्द प्रोरेशियो है जिसका उपयोग हम इसे समझाने के लिए करते हैं। एक सारांश जो आज तक उन्होंने जो कुछ भी कहा है उसे इस स्तर तक पहुँचाने के लिए एक मजबूत सारांश है।

ताकि लोग इसे चुन सकें और इसके साथ काम कर सकें। इसीलिए मैंने संक्षेप में बताने का प्रयास किया ताकि आपको पता चले कि क्या चल रहा है। हालाँकि जब तक मैं अंतिम रूप से कहूँगा, तब तक आपका मन हाँ, अंतिम रूप से कहेगा।

अंत में पॉल कहते हैं। अंत में, मैं चाहता हूँ कि आप कुछ बातें समझें। आपको मजबूत होने की ज़रूरत है।

निष्क्रिय में मजबूत बनो। कुछ अनुवादों में, यह प्रभु में मजबूत है।

लेकिन प्रभु में मजबूत होने से यह पता नहीं चलता कि यहाँ क्या हो रहा है। मजबूत बनो। मजबूत होने का लाभ उठाओ।

प्रभु में और उसकी शक्ति में। यह बहुवचन है। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि यहाँ क्या हो रहा है।

यहाँ यह व्यक्तिगत मामला नहीं है। सामूहिक रूप से एक चर्च के रूप में प्रभु में मजबूत बनो। और उसकी शक्ति में।

पद 11. परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको।

वह जो कहता है वह यह है कि परमेश्वर के सारे हथियार पहन लो। यहाँ कहने का मतलब यह नहीं है कि वह परमेश्वर के सारे हथियारों की सूची बनाने जा रहा है। लेकिन वह यह कहने की कोशिश कर रहा है कि आपको सुरक्षा के लिए क्या चाहिए, इसकी पूरी समझ होनी चाहिए।

इससे पहले, आप कहेंगे कि आप परमेश्वर की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के कवच को पहनने के लिए कह रहे हैं। उन्होंने पहले पाठकों से कहा कि वे मजबूत बनें। यानी परमेश्वर द्वारा मजबूत बनें।

और अगर परमेश्वर ने उन्हें मजबूत किया है, तो उन्हें उठकर परमेश्वर के कवच पहन लेने चाहिए। और अगर वे ऐसा करते हैं, तो वे शैतान की चालों के खिलाफ खड़े हो सकेंगे। शैतान की चालों के बारे में सोचिए।

ताकि हम वास्तव में देख सकें कि उन शब्दों का अनुवाद कैसे किया जा सकता है। क्योंकि अंग्रेजी में शब्द के विभिन्न अनुवादों का उपयोग किया जाता है। शब्द शैतान की योजना है।

वास्तव में, यदि आप ग्रीक पढ़ते हैं, तो मैंने आपके लिए एक ग्रीक शब्द रखा है। यदि आप ग्रीक पढ़ते हैं तो आप वास्तव में महसूस करेंगे कि योजनाओं के लिए शब्द लगभग वही शब्द है जिससे हमें विधि शब्द मिला है। यह लगभग अंग्रेजी शब्द मेथड जैसा लगता है।

लेकिन इस शब्द का अनुवाद वास्तव में चालाकी से किया जा सकता है। इसलिए हम शैतान के चालाक तरीकों का सामना कर सकते हैं। यह स्पष्ट नहीं है और यह स्पष्ट नहीं है।

और यह ऐसा नहीं है कि अगर शैतान आने वाला है तो शैतान आपको फोन करके कहेगा कि मैं तुमसे मिलने आ रहा हूँ। क्या तुम रक्षात्मक तंत्र लगा सकते हो ताकि मैं अंदर न आ सकूँ? शैतान की योजनाओं का अगर चालाकी से अनुवाद किया जाए जैसा कि कुछ अंग्रेजी अनुवादों में होता है तो यही भाव प्रकट होता है। यहाँ योजनाओं के लिए शब्द का अनुवाद छल-कपट के रूप में भी किया जा सकता है।

लोगों को धोखा देने की उनकी क्षमता। इसका अनुवाद चालाकी या चालाकी के रूप में किया जा सकता है। मुझे जो अनुवाद पसंद है, उनमें से एक है धोखे की तरह।

इसका अर्थ यह है कि यह छलावा या प्रलोभन का रूप ले लेता है। तो यह इतना षडयंत्रकारी है कि आप आ सकते हैं और दिखावा कर सकते हैं कि यह मूल है और आपको प्रलोभन देकर पकड़वा सकते हैं। मैं इस पर इतना ध्यान क्यों देता हूँ? खैर, मुझे खुशी है कि आपने यह सवाल पूछा।

यही कारण है कि जब हम आध्यात्मिक युद्ध के बारे में बात करते हैं, तो कभी-कभी हम इस धारणा के साथ काम करते हैं कि हमें पता होना चाहिए कि हम आध्यात्मिक युद्ध में हैं। और यह xyz होने जा रहा है। पॉल ने इस भाषा का इस्तेमाल ESV में शैतान की साज़िश के रूप में किया है।

वह कह रहा है कि जब शैतान अपनी योजनाएँ चलाता है, तो वह ऐसे तरीके से नहीं आता जिसे आप आसानी से पहचान सकें। वह इस उम्मीद में कई सूक्ष्म और चालाक तरीके अपनाता है कि आप उसकी उम्मीदों के मुताबिक धोखा खाकर झुक जाएँ। फिर पद 12 युद्ध की प्रकृति को स्पष्ट करता है।

पॉल आगे कहते हैं कि जब हम युद्ध की प्रकृति के बारे में बात करते हैं, तो हमें यह जानना चाहिए कि हम मांस और रक्त के विरुद्ध नहीं बल्कि शासकों, अधिकारियों, इस वर्तमान अंधकार पर ब्रह्मांडीय शक्तियों, स्वर्गीय स्थानों में बुराई की आध्यात्मिक शक्तियों के विरुद्ध कुशती लड़ रहे हैं। इसलिए, इस युद्ध की प्रकृति में, आप जानना चाहते हैं कि यह निकट शारीरिक संपर्क है। कुशती।

कल्पना कीजिए। मैंने कभी-कभी इसकी कल्पना करने की कोशिश की है। आप जैसे मनुष्य, मैं जैसे मनुष्य, और पौलुस के पत्र के पाठक, पहली सदी में कैसे होंगे।

राक्षसी शक्तियों वाले आध्यात्मिक प्राणियों के साथ कुशती लड़ी। आमने-सामने, शरीर से शरीर, हाथ से हाथ। वे आध्यात्मिक प्राणी हैं।

आप इससे कैसे निपटते हैं? पॉल का कहना यह है। ऐसा मत सोचिए कि यह कोई दूर का दुश्मन है जो आप पर तीर चला रहा है। वह आपके करीब आता है और वास्तव में आपके साथ बहुत करीब से निपटता है।

आप इसे महसूस कर सकते हैं और सूँघ सकते हैं, लेकिन उसका तरीका षडयंत्रकारी है। वह छद्म टैटू का उपयोग करता है। लेकिन इसके अलावा, आपको कुछ और भी जानना होगा।

हाँ, यह एक कुश्ती है। लेकिन यह कुश्ती नहीं है, बस अगर आप सोचते हैं, तो यह मनुष्यों के खिलाफ नहीं है, मांस और रक्त के खिलाफ नहीं है। लेकिन यह शासकों के खिलाफ, अधिकारियों के खिलाफ कुश्ती है, जो विभिन्न रूपों की बुरी आध्यात्मिक शक्तियों का संदर्भ देता है।

यह इस वर्तमान अंधकार पर ब्रह्मांडीय शक्तियों के विरुद्ध एक संघर्ष है। उन्होंने पहले ही अंधकार में रहने वाले अविश्वासियों के बारे में बात की थी, और इससे पहले कि वे ईसाई बनें, उनकी समझ अंधकारमय थी। उन्होंने अंधकार में जीवन और प्रकाश में जीवन के बीच अंतर भी बताया।

और यहाँ वह कहता है, ये ताकतें अंधकार के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वह विश्वासियों को जागरूक कर रहा है कि यह एक गंभीर बात है जो वास्तव में दुश्मन को देखने और चीजों को हल करने के मामले में उनके नियंत्रण से परे है। लेकिन अगर वे कवच पहनने से पहले भगवान द्वारा मजबूत किए जाते हैं, तो वे आगे बढ़ेंगे और परिणाम प्राप्त करेंगे।

युद्ध की प्रकृति आसान नहीं है। और वास्तव में, वह यह भी कहते हैं कि युद्ध स्वर्गीय स्थानों में दुष्टता की आध्यात्मिक शक्तियों के विरुद्ध है। श्लोक 12 काफी डरावना है जब आप इसे इस तरह से देखते हैं और कहते हैं, यह वास्तव में, शाब्दिक रूप से परीक्षण जैसा दिखता है।

आप मांस और रक्त के खिलाफ नहीं लड़ रहे हैं, लेकिन आप इसके खिलाफ लड़ रहे हैं: शासकों के खिलाफ, अधिकारियों के खिलाफ, इस दुनिया पर ब्रह्मांडीय शक्तियों के खिलाफ, इस वर्तमान अंधकार के खिलाफ, और स्वर्गीय स्थानों में बुराई की आध्यात्मिक शक्तियों के खिलाफ। आप उनके साथ लड़ रहे हैं। हालाँकि, सवाल यह है कि यह लड़ाई कैसे हो रही है? क्या लड़ाई बांधने और हारने से हो रही है? मुझे पेंटेकोस्टल और गैर-सांप्रदायिक चर्चों में विभिन्न काम करने का अवसर मिलता है।

जैसे-जैसे आप योग्य होते हैं, मुझे प्रेस्बिटेरियन, मेथोडिस्ट और अन्य चर्चों में काम करने का अवसर मिलता है। लेकिन हाल ही में, मैंने गैर-सांप्रदायिक चर्चों में अधिक काम किया है। इनमें से कुछ चर्च जहाँ मैं जाता हूँ, जब वे आध्यात्मिक युद्ध के बारे में बात करते हैं, तो यह सब बाध्यकारी और हारने वाला होता है।

मैं तुम्हें शैतान से बांधता हूँ, तुम्हें इससे बांधता हूँ। देखिए, इस अंश में एक बात स्पष्ट है। विरोधी आध्यात्मिक है।

एक बहुत ही करीबी संपर्क युद्ध में, वे स्वर्गीय क्षेत्रों में हैं, और वे इस दुष्ट अंधकार में हैं। स्पष्ट रूप से, वे जो करने का प्रस्ताव रखते हैं वह विश्वासियों के हित में नहीं है। लेकिन एक लड़ाई ऐसी चीज नहीं है जिसे आप उठकर आध्यात्मिक रूप से करते हैं, वास्तव में।

मैं आपकी सोच को थोड़ा बदलना चाहता हूँ। यह लड़ाई नैतिक जीवन शैली से लड़ी जाती है। वास्तव में, पॉल का प्रस्ताव है कि, जैसा कि वह अब तक सिखाता रहा है, आध्यात्मिक युद्ध नैतिक स्तर पर लड़ा जाता है।

जब लोग वास्तव में सही ईसाई नैतिक सिद्धांतों को अपना रहे हैं, बुद्धिमानी से नैतिक निर्णय ले रहे हैं, और उन मानकों पर खरा उतर रहे हैं जिनकी परमेश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करता है। इसलिए, जब वह कहता है, मजबूत बनो और परमेश्वर के कवच को पहन लो, तो सबसे अच्छी बात जो वह करने जा रहा है वह यह नहीं है कि कवच को इस तरह परिभाषित किया जाए जैसे कि आप अंदर जाते हैं और बस अंदर जाते हैं और बांधना और खोना शुरू कर देते हैं। आइए इसे श्लोक 14 से पढ़ें।

और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन लो। और हर हाल में धार्मिकता का कवच पहिन लो। और हर हाल में विश्वास की ढाल ले लो जिस से तुम उस दुष्ट अर्थात् शैतान की जलती हुई मृत्यु को बुझा सको, और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।

अगर आप समझते हैं कि पॉल यहाँ क्या कर रहा है, तो आप समझ जाएँगे कि जब वह कहता है, सत्य की बेल्ट पर उपवास, तो वह रोमन सैनिक की कल्पना का उपयोग कर रहा है जहाँ रोमन सैनिक की पोशाक, जैसा कि मैंने आपको पहले दिखाने की कोशिश की थी, पहनने पर थोड़ी ढीली होगी, लेकिन फिर बेल्ट सब कुछ एक साथ रखती है और सैनिक के लिए घूमना आसान बनाती है। पॉल और ईसाई के लिए, ईसाई को आसान गतिशीलता और आसान आंदोलन के लिए जो चाहिए, वह है बस घूमने और वह करने की क्षमता जो भगवान उन्हें करने के लिए बुला रहे हैं, सत्य है। दूसरे शब्दों में, जब आप सच बोलना चुनते हैं, सत्य के लिए खड़े होते हैं, और ईसाई अखंडता में रहते हैं, तो आपने कवच का एक हिस्सा पहन लिया है।

क्या आपने इस बारे में सोचा है? हम हाल ही में एक सम्मेलन में थे, और मुझे इफिसियन 6 पर एक पेपर का जवाब देना था। साथी विद्वानों ने यह तर्क देने में बहुत समय बिताया कि आध्यात्मिक युद्ध केवल बांधने और हारने और शैतानों को बाहर निकालने के बारे में है, और यह इफिसियन 6 से है। मैं अपने सहकर्मियों के चेहरों को देख रहा था क्योंकि मैं आश्चर्यचकित था जब मैंने खड़े होकर कहा, नहीं, यह नैतिकता के बारे में है। और मैं एक सवाल पूछना चाहता था जो मैं अब पूछूँगा। क्या सत्य बांधने और खोने वाला है? क्या आप जानते हैं कि शैतान, और उसकी एक मुख्य योजना, हमें झूठ बोलने और झूठ में जीने के लिए मजबूर करना है? यदि पॉल अपनी नैतिकता को सारांशित करता है, तो वह कहता है कि जब आप सत्यवादी होते हैं, तो आप उसे गिरा देते हैं।

वह इसके साथ काम कर सकता है। और इसलिए, सत्य आपको एक साथ रखता है और आपके लिए प्रभु यीशु मसीह में एक विश्वासी के रूप में आगे बढ़ना संभव बनाता है। दूसरा कवच जिसके बारे में वह बात करता है वह है धार्मिकता का कवच, जो आपके शरीर के ऊपरी हिस्से को दुश्मन द्वारा आपको नुकसान पहुँचाने से बचाता है।

जो आपके हृदय को सुरक्षित रखेगा और चोटिल नहीं करेगा, वह धार्मिकता है। इफिसियों के अध्याय 4 में, पौलुस ने पहले ही कहा था कि हमें वास्तव में परमेश्वर का अनुसरण करना चाहिए। हमें परमेश्वर के सच्चे गुणों को धारण करना चाहिए, जो पवित्रता और धार्मिकता है।

यहाँ वह कहता है, अब, अंत में, दो चीज़ें जो मैं चाहता हूँ कि तुम धारण करो, जो सद्गुण हैं जो मैं चाहता हूँ कि तुम धारण करो। नंबर एक है सत्य। नंबर दो है धार्मिकता।

जब आप धार्मिकता का मार्ग चुनते हैं, तो आप अपने हृदय को दूषित होने से बचाते हैं, और आप अपने हृदय को चोट लगने से बचाते हैं, और आप अपने हृदय को घायल होने से बचाते हैं। वाह, यह अजीब है, है न? मैंने भी विद्वानों से यह सुना है, जब मैंने इस पर ध्यान आकर्षित किया। हाँ, इफिसियों का कहना है कि हम शैतान के साथ करीबी लड़ाई में हैं, और वह इस पद्धति को चुनता है, जिसका अनुवाद चालाक तरीकों, षडयंत्रकारी तरीकों, छलावरण और चारा में किया जा सकता है।

वह इस करीबी लड़ाई में इन सबका इस्तेमाल हमें उस जगह से दूर ले जाने के लिए करता है जहाँ परमेश्वर चाहता है कि हम रहें। और इसलिए, क्योंकि हमने परमेश्वर को हमें मजबूत करने के लिए खुद का लाभ उठाया है, हमें उठकर परमेश्वर के कवच को पहनना चाहिए। और परमेश्वर का कवच वह चीज है जिसे हम हर दिन पहनते हैं, क्योंकि शैतान कभी आराम नहीं करता।

जब वह सात गिरता है, तो यह काम कर रहा है। सूची में पहला है सत्य और धार्मिकता। जब हमारे पास सत्य और धार्मिकता होती है, तो दूसरे लोग भी आसानी से अपने स्थान पर गिरना शुरू कर देते हैं।

अब हम आसानी से घूम सकते हैं, जैसे शांति के सुसमाचार वाले जूते पहनना। यशायाह ने उन लोगों के बारे में यही कहा था जो खुशखबरी लाते हैं। पैर, पैर कितने सुंदर हैं, या खुशखबरी लाने वालों के पैर कितने सुखद हैं।

इसलिए, जब हम चलते-फिरते हैं, तो हम शांति के सुसमाचार के साथ चलते हैं, और जिस तरह से हम लोगों के साथ बातचीत करते हैं, उसमें हम शांति के राजकुमार को वास्तविक बनाते हैं। यह परमेश्वर के साथ शांति नहीं है। याद रखें, यह कवच में है।

यह वह है जिसे आप अपने पैरों पर रखकर चलते हैं। लोगों के साथ अपने व्यवहार में, आपके पास शांति का सुसमाचार है। आप अभी तक जल नहीं रहे हैं और हार नहीं रहे हैं।

ओह हाँ। और फिर उन्होंने कहा, अगर आपको दुश्मन के हथियारों के बारे में पता नहीं है, तो दुश्मन के पास ये ज्वलंत मौत के तीर हैं जिन्हें वह चला देगा। इसलिए, ढाल ले लो, और ढाल व्यक्तिगत जिम्मेदारी की मांग करती है।

अभी प्रार्थना और प्रतीक्षा नहीं कर रहा हूँ। विश्वास की ढाल। ढाल एक बहुत बड़ी धातु है जिसे सैनिक पकड़ता है, ताकि जब दुश्मन तीर चलाए तो आप ढाल लगाकर तीरों को आगे बढ़ने से रोक सकें।

और जो बात सैनिक को ढाल से सुरक्षित रहने के लिए प्रेरित करेगी, वह है सैनिक को तैयार रहना कि ढाल हमेशा उसके आसपास है और आपके पास एक अच्छी ढाल है। ढाल विश्वास की ढाल है। यह परमेश्वर पर विश्वास करने की ढाल है कि उसने अपने बेटे यीशु मसीह को आपके लिए आने और मरने के लिए भेजा।

यह विश्वास करने और अपने जीवन को ईश्वर के हाथों में सौंपने की ढाल है ताकि आप दुनिया की शर्मनाक इच्छाओं और प्रलोभनों के आगे न झुकें, बल्कि ईश्वर ने आपके लिए जो रखा है, उस पर टिके रहें। ढाल तब होती है जब आप दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि ईश्वर आपके पक्ष में है, और जैसा कि शास्त्र कहता है, अगर ईश्वर हमारे पक्ष में है, तो हमारे खिलाफ कौन हो सकता है? ढाल विश्वास में शास्त्र में कही गई बातों को थामे रखना है ताकि जब शैतान आप पर तीर चलाए तो आप उसमें घुस न सकें और संदेह पैदा न कर सकें।

क्या आपको याद है जब सुसमाचार में शैतान ने यीशु की परीक्षा ली थी? क्या आपको एहसास है कि उसने शास्त्रों का किस तरह इस्तेमाल किया था? जब आप कहते हैं कि यह लिखा है और यह लिखा है। हाँ, यह लिखा है, और इसी तरह युद्ध जीता गया। विश्वास की ढाल आग के तीरों से दुश्मन को भेदने से बचाती है।

आपको यह जानना होगा कि ये तीर आसान नहीं हैं। पौलुस ने इन्हें दुष्टों के ज्वलंत तीरों के रूप में वर्णित किया है। ये लगभग आग के साथ आते हैं, लेकिन विश्वास इसे बुझा देगा।

तो, हमें प्रार्थना करने और बंधने और हारने का यह विचार कहाँ से मिला? ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रेरितों के काम की पुस्तक और यीशु की सेवकाई में अन्य स्थानों पर, लोगों का सामना राक्षसों से हुआ था, और उन्होंने शैतानों को बाहर निकाला। और इसलिए जब वे ऐसा करते हैं और शिष्यों को सेवकाई के लिए नियुक्त किया जाता है, और वे प्रार्थना करते समय भूत-प्रेत भगाने में काम करने वाली ईश्वर की शक्ति को देखते हैं, तो यह हमारे चर्च के कुछ लोगों की मानसिकता का हिस्सा बन जाता है कि जब हम वास्तव में आध्यात्मिक युद्ध के बारे में बात करते हैं तो हमारा चरित्र मायने नहीं रखता है, लेकिन हम बस प्रार्थना करते रह सकते हैं और अगर हम तीन घंटे प्रार्थना करते हैं तो शायद हम शैतान को चार या पाँच बार नीचे गिरा दें और यह ठीक रहेगा। नहीं, युद्ध वास्तव में 24x7 जारी रहता है।

परमेश्वर के कवच को धारण करने का अर्थ है आवश्यक मसीही निष्ठा को अपनाना और वह जो शैतान को वास्तव में आपके शरीर में प्रवेश करने से रोकता है। पौलुस पद 18 से 20 में आध्यात्मिक युद्ध पर चर्चा में प्रार्थना को बहुत महत्वपूर्ण स्थान पर लाएगा। फिर वह हर समय प्रार्थना करना शुरू कर देगा। दूसरे शब्दों में, प्रार्थना कवच में से एक नहीं है।

प्रार्थना, अगर आप चाहें, तो वह हवा है जिसमें हम सांस लेते हैं। प्रार्थना हर समय विश्वासी के जीवन का हिस्सा होनी चाहिए, हर समय आत्मा में प्रार्थना करना, वैसे, जिसका मतलब यहाँ पर अन्य भाषाओं में बोलना नहीं है, बल्कि पवित्र आत्मा की शक्ति में सभी प्रार्थनाओं और विनतियों के साथ प्रार्थना करना है। उस उद्देश्य के लिए, प्रार्थना की उस भावना में, पूरी दृढ़ता के साथ सतर्क रहें, सतर्क रहें।

जल्दी से हार मत मानो। संतों के लिए भी प्रार्थना करो। तो सबसे पहले, तुम अपने लिए प्रार्थना करना शुरू करो, और तुम्हें संतों के लिए भी प्रार्थना करनी होगी।

हम सभी को प्रार्थना के सहारे की ज़रूरत है। प्रार्थना वैकल्पिक नहीं है। प्रार्थना ही वह सहारा है, हमारी सहारा रेखा है जब हम ईश्वर को पुकारते हैं और कहते हैं, ईश्वर, हम युद्ध के मैदान के बीच में हैं, और युद्ध लड़ा जा रहा है।

कभी-कभी, यह कठिन हो जाता है, और हम थक जाते हैं। क्या हमें हवाई सहायता मिल सकती है? क्या हमें यह सब सहायता मिल सकती है? क्या आप कृपया हमारा समर्थन कर सकते हैं? प्रार्थना वह है जो हर समय हमारे जीवन का हिस्सा है। हमें हर समय नैतिकता को अपनाने की आवश्यकता है।

अपने लिए प्रार्थना करें, दूसरे संतों के लिए प्रार्थना करें और पॉल कहते हैं, हमारे लिए भी प्रार्थना करें। इस लड़ाई में हमें आपकी प्रार्थनाओं की ज़रूरत है। पॉल के लिए, आध्यात्मिक युद्ध बहुत वास्तविक है।

शैतान का काम इतना वास्तविक है, और फिर भी इसे किनारे करना इतना आसान है। इसीलिए उसने दुष्ट शक्तियों की गतिविधि का वर्णन करने के लिए षडयंत्र शब्द का इस्तेमाल किया। वह चाहता है कि प्रार्थना की जाए क्योंकि अगर वे प्रार्थनाएँ की जाती हैं, तो परमेश्वर उसे सुसमाचार, सुसमाचार के रहस्य का प्रचार करने के लिए आवश्यक साहस दे सकता है।

और वह कहता है, वैसे, यही वह है जिसके लिए मुझे बुलाया गया है। मैं इस कारण का राजदूत हूँ। हाँ, इफिसियों के अपने नीतिशास्त्र में, वह निकट-शारीरिक संपर्क युद्ध की इस शक्तिशाली कल्पना के साथ संक्षेप में बता रहा है।

और वह कह रहा है, यह कहने में जल्दबाजी मत करो कि मैं सिर्फ प्रार्थना सभा में जाता हूँ, और मैं सिर्फ शैतान के पास जाता हूँ, और मैं कहता हूँ, नहीं। मसीही निष्ठा, प्रकाश के रूप में जीना, प्रकाश का फल उत्पन्न करना, केवल यही अंधकार के निष्फल कार्यों को समाप्त करता है। यह अंधकार के निष्फल कार्यों को उजागर करता है।

विश्वास की ढाल उन सभी अग्निबाणों को बुझा देगी जो फेंके जाएँगे। क्या आपको एहसास है कि पॉल के दिनों में, जैसा कि अब है, हम एक ईसाई जीवन नहीं चुन सकते हैं जो कहता है, अगर मैं चर्च जाता हूँ और घर वापस आता हूँ, तो मैं भगवान के साथ एक अच्छे रिश्ते में हूँ? ईसाई जीवन जो कहता है, मुझे सप्ताह में एक बार सामूहिक प्रार्थना में जाने का दायित्व है।

इसलिए, मैं परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए ऐसा करूँगा। और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं उसके बाद अपना जीवन कैसे जीता हूँ। नहीं, हालाँकि हम सभी पापी हैं और अनुग्रह से बचाए गए हैं, पौलुस हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करता है कि शैतान हमारे जीवन के सबसे छोटे से कमज़ोर स्थान पर अवसर की तलाश में रहता है ताकि वह हमारे अंदर घुसकर हमारा फ़ायदा उठा सके।

और मैं आपको जल्द ही बता दूँगा कि उसका उद्देश्य क्या है। इस सब के पीछे, इस युद्ध के पीछे उसका कारण यह नहीं है कि हम क्षेत्र हासिल करने के लिए लड़ रहे हैं। एक और उत्तेजक क्षेत्र वह है जब मैं इस विषय पर बात करता हूँ और कहता हूँ, अरे, युद्ध खरीदना और हारना नहीं है।

सबसे पहले, जब तक मैं अपनी बात खत्म नहीं कर लेता, तब तक मुझे यही प्रतिक्रिया मिलती है। दूसरा हिस्सा तब होता है जब मैं आता हूँ और कहता हूँ, ओह, हम किसी के खिलाफ नहीं लड़ रहे हैं, हम कुछ क्षेत्रों को जीतने के लिए नहीं लड़ रहे हैं, या हम कुछ क्षेत्रों को नहीं खो रहे हैं। ओह, हाँ।

क्योंकि पॉल के लिए, जो हो रहा है वह यह है। लक्ष्य यह है: शैतान की योजनाओं के खिलाफ खड़े होने में सक्षम होना। यहाँ मुख्य शब्द है खड़े होना।

युद्ध के पहले कुछ छंदों में यह चार बार आता है। हम पहले ही जीत चुके हैं; मसीह ने हमारे लिए जीत हासिल कर ली है और हमें उस विजयी स्थान पर स्थापित कर दिया है। हमें और अधिक क्षेत्र हासिल करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन मसीह में हमारी स्थिति अस्थिर हो सकती है।

शैतान का उद्देश्य यह नहीं है कि वह एक और क्षेत्र खो दे। बल्कि यह है कि वह हमें मसीह में अपना स्थान खोने का कारण बनाए। आपको अध्याय 2, आयत 1 से 3 तक याद होगा, हवा की शक्ति के शासकों के खिलाफ, यीशु ने हमें उनके शासन से बचाया।

इसलिए, अगर हम अपनी स्थिति को बनाए नहीं रखते हैं, तो हम उस ओर झुक जाते हैं। पॉल कहते हैं, कवच पहनें ताकि आप खड़े हो सकें और घूम सकें। हाँ, यह कोई क्षेत्र हासिल नहीं करने जा रहा है, लेकिन खड़ा होना है।

देखिए कि वह इसे फिर से कैसे कहता है। पद 13, बुरे दिन में डटे रहना, और सब कुछ करके दृढ़ रहना। हम यह लड़ाई इसलिए लड़ रहे हैं ताकि हम मसीह में अपना विशेषाधिकार प्राप्त स्थान न खो दें।

अब, मैं यह नहीं कह रहा हूँ, और मैं कैल्विनिस्टों और अर्मेनियाई लोगों के बीच इस विचार या बहस का परिचय नहीं दे रहा हूँ कि क्या कोई व्यक्ति मोक्ष खो देता है या नहीं, क्या होगा यदि वे यह लड़ाई हार जाते हैं, और नैतिक रूप से, वे नैतिक रूप से दिवालिया हो जाते हैं, क्या वे अपना मोक्ष खो देते हैं, और यह सब। अगर कुछ भी हो, तो मैं स्वर्ग जाने पर पॉल के साथ चाय पीना चाहूँगा। और मैं उनसे स्पष्टीकरण माँगना चाहूँगा।

लेकिन मैं यह भी अच्छी तरह जानता हूँ कि पॉल को कैल्विनवाद और आर्मिनियनवाद के बारे में इस बहस के बारे में पता नहीं था। इसलिए, वह पूछ सकता है, ऐसा क्या है जो आप लोग कहते हैं कि मैंने कहा था कि मुझे नहीं पता था कि मैंने कहा था? यहाँ उसका मुख्य मुद्दा यह है कि दुश्मन असली है। नैतिक शुद्धता, सतर्कता और भक्ति, प्रार्थना का जीवन, मसीह में हमारी स्थिति को बनाए रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

और बुरे दिनों में भी, हम जो कुछ भी वह हम पर फेंकेगा, उसका सामना करने में सक्षम होंगे। और वह आगे कहता है, दृढ़ रहो, डगमगाओ मत। हम फिर से लड़ रहे हैं, रूसी खून के खिलाफ नहीं, बल्कि सत्ता की इन रियासतों के खिलाफ ताकि हम खड़े हो सकें और दृढ़ रह सकें।

पद 14, शब्द 'खड़े रहो' का चौथा प्रयोग, 'खड़े रहो' से शुरू होगा, इसलिए, सत्य की घंटी को बांधकर। इसलिए इससे पहले कि वह आपको आवश्यक हथियारों और उन गुणों को सूचीबद्ध करे जिन्हें हमें प्रदर्शित करने की आवश्यकता है, वह 'खड़े रहो' शब्द से शुरू करेगा। इसलिए, उस खड़े रहो। पॉल के लिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है।

और अगर आप इसे समझते हैं, तो आप समझ सकते हैं कि उन्होंने इस बातचीत में प्रार्थना को कैसे शामिल किया है। हर समय आत्मा में प्रार्थना करें। हर समय प्रार्थना करें।

पूरी प्रार्थना और विनती के साथ प्रार्थना करो। अपनी प्रार्थनाओं में सतर्क रहो। संतों के लिए विनती करो।

पॉल के लिए प्रार्थना करें ताकि वह अपने कर्तव्यों का अच्छी तरह से निर्वहन कर सके। तब पॉल, जो इस समय तक चर्च को ऊंचा उठाता रहा है, उन्हें स्थिति को युद्ध के रूप में देखने के लिए कहता रहा है, वह पद 21 से इस तरह से अपना पत्र समाप्त करेगा, ताकि आप भी जान सकें कि मैं हूँ और यह जान सकें कि मैं कैसा हूँ और क्या कर रहा हूँ।

तुखिकुस जो मेरा प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें सब बातें बताएगा। मैंने उसे तुम्हारे पास इसलिये भेजा है, कि तुम जान सको कि हमारी कैसी दशा है, और वह तुम्हारे हृदयों को ढाढ़स दे। भाइयों को शान्ति मिले, और परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से विश्वास सहित प्रेम हो।

उन सभी पर अनुग्रह हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करते हैं, अविनाशी प्रेम से। देखिए समापन कैसे होता है। वहाँ कुछ कीवर्ड देखें।

रिश्तेदारी की अवधारणा को सामने लाओ। प्रिय भाई जो एक वफादार सेवक है। भाइयों को शांति मिले।

इफिसियों में पौलुस ने प्रेम के बारे में बहुत बात की है। विश्वास के साथ प्रेम। हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रेम।

कैदी पिस्तौल पर इस श्रृंखला के समापन में इफिसियों के बारे में सोचते समय कुछ स्तंभ देना चाहूंगा।

जब आप इफिसियों के बारे में सोचते हैं, तो कृपया एकता के विषय के बारे में सोचें कि विश्वास का बहु-जातीय समुदाय मसीह यीशु में एक हो गया है। कि मसीह में, यहूदियों और अन्यजातियों के बीच कोई भेद नहीं है।

हम एक हैं। यह एक रहस्य है जो पौलुस को ज्ञात था। यह सुसमाचार का रहस्य है जिसका वह प्रचार करता है।

मसीह में, जातीय बाधाएँ टूट गई हैं। नागरिकता को एक उच्चतर पहचान में बदल दिया गया है। रोमी, यूनानी और यहूदी अब एक साथ आ सकते हैं और परमेश्वर के घराने के दत्तक सदस्य बन सकते हैं।

हम सब मसीह में एक हो सकते हैं। और हम सभी को उस एकता को बनाए रखने की चुनौती दी गई है जो हमें दी गई है। अगली बात जिसके बारे में मैं चाहता हूँ कि आप इफिसियों की आत्मा ब्रह्मांड विज्ञान के बारे में सोचें।

दुनिया सिर्फ भौतिक दुनिया नहीं है। दुनिया का एक आध्यात्मिक आयाम भी है। इसमें बुरी ताकतें हैं और ईश्वर की शक्ति भी है।

विश्वासी के लिए, यह जानना ज़रूरी है कि बुराई की ताकतें वास्तविक हैं, लेकिन मसीह ने उन्हें हरा दिया है, और उसने हमें पवित्र आत्मा की शक्ति से मुहर लगाई है, जो हमें, संतों को विरासत की गारंटी देता है। समय के साथ, हम इन प्रधानताओं और शक्तियों के खिलाफ़ बहुत संघर्ष करते हैं और लड़ते हैं, लेकिन क्योंकि मसीह ने यह सब हमारे लिए किया और हमारे लिए जीत हासिल की है, इसलिए कुछ भी हासिल नहीं करना है, लेकिन सब कुछ बनाए रखना है। हम इस आध्यात्मिक लड़ाई को लड़ते हैं ताकि हम जो कुछ भी हमारे पास है और जो कुछ भी हम मसीह में हैं, उसमें दृढ़ रहें।

इस आत्मा ब्रह्मांड विज्ञान में, यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें हर समय ईश्वर की आवश्यकता होती है, और हम एक पैटर्न देखते हैं जहाँ पॉल खुद ईश्वर से प्रार्थना करेगा, ईश्वर की स्तुति करेगा, और कहेगा कि यदि आत्मा वास्तव में हमें भर रही है, तो हम वास्तव में प्रेरित होंगे, और इसका प्रभावी परिणाम यह होगा कि हम हर समय ईश्वर के प्रति कृतज्ञता और स्तुति से भरे रहेंगे। यहाँ तक कि जब वह आध्यात्मिक युद्ध के अंत में आया, तो उसने आवश्यक कवच और हथियारों को सूचीबद्ध करते हुए कहा कि हर समय हमारे जीवन के साथ, प्रार्थना इसका हिस्सा होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, आध्यात्मिक प्राणी के हस्तक्षेप और हमारे पक्ष में कार्य करने की हमारी आवश्यकता एक निरंतर आवश्यकता है और हमें अपने बाहरी समर्थन के लिए जुड़े रहने की आवश्यकता है।

मैं इसे एक अनुभवी सैनिक के बेटे के रूप में सैन्य शब्दावली में कहना पसंद करता हूँ। हमें हवाई सहायता की आवश्यकता है, जितना हम अक्सर सोचते हैं। हमें अभी सिग्नल चालू रखने की आवश्यकता है।

हमें फोन चालू रखने की जरूरत है। हम रेडियो बंद नहीं कर सकते और अगर हम अग्रिम मोर्चे पर सुरक्षित रहना चाहते हैं तो हमें अपनी पूरी जिंदगी रेडियो चालू रखना होगा। हमें प्रार्थना की जरूरत है।

हमें अपने लिए, संतों के लिए प्रार्थना की ज़रूरत है, और पौलुस ने अपने लिए प्रार्थना करने की बात कही है। विस्तार से, आज, आप अपने पादरी के बारे में सोच सकते हैं। हमें प्रार्थना की ज़रूरत है।

हमें जुड़े रहने की ज़रूरत है। हाँ, ईसाई धर्म के बारे में हमारे पश्चिमी विचारों में अक्सर आत्मा ब्रह्मांड विज्ञान की अनदेखी की जाती है, लेकिन अगर हम इसे अनदेखा करते हैं, तो हम पॉल को अनदेखा करते हैं। अगर हम इसे अनदेखा करते हैं, तो हम यह अनदेखा करते हैं कि परमेश्वर हमारे लिए क्या कर रहा है और हम कैसे परमेश्वर से जुड़ सकते हैं और वास्तव में परमेश्वर से शक्ति और अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं।

तीसरी बात जो आपको याद रखनी चाहिए वह है रिश्तेदारी। हम ईश्वर के परिवार के सदस्य हैं। ईश्वर पिता है।

यीशु पुत्र है। हम सभी गोद लिए हुए बच्चे हैं, और साथ मिलकर हम चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। पहली सदी में चर्च, जैसा कि आज हमारे लिए है, सभी को एकता में रहने की चुनौती है क्योंकि यहाँ सम्मान और शर्म की संस्कृति है।

हमारा पारिवारिक सम्मान दांव पर लगा है। हमें उस बुलाहट के योग्य तरीके से जीने की ज़रूरत है जो हमें मिली है ताकि हम परमेश्वर के नाम को बदनाम न करें। हम मसीह के बिना दुनिया में परमेश्वर के प्रति जो कुछ भी है उसका मज़ाक नहीं उड़ाते।

अगर हम रिश्तेदारी को उस व्यापक अर्थ में समझते हैं, तो हमें इसे घर में लाना चाहिए और मसीह को अपने घर का केंद्र बनाना चाहिए, इतना कि घर के हर व्यक्ति को दिया जाने वाला हर निर्देश मसीह के प्रभुत्व से जुड़ा हो। कि पत्नियों को हमें प्रभु के अधीन करना चाहिए। पतियों को हमें वैसे ही प्यार करना चाहिए जैसे प्रभु यीशु ने प्यार किया था।

बच्चों को प्रभु के प्रति हमारी आज्ञा माननी चाहिए। माता-पिता, वास्तव में प्रभु में अपने बच्चों का सम्मान करें और उनका ख्याल रखें। दासों को प्रभु के प्रति हमारी आज्ञा माननी चाहिए।

प्रभु हमें अपने अधीन कर लेते हैं। प्रभु, हमारे घरों पर अपने प्रभुत्व में, हमारे सूक्ष्म परिवार में स्पष्ट हो जाते हैं। ओह, अगर हम जानते कि हम परिवार के सदस्य हैं, तो हम समझ सकते थे कि हम असहमत हैं, और फिर भी हम शांति बना सकते थे क्योंकि हमारे पास शांति का राजकुमार है।

जिसने दुश्मनी की दीवारें तोड़ दी हैं। और अंत में, क्राइस्टोलॉजी के बारे में सोचिए। क्राइस्ट के बारे में सोचिए।

अगर आप अपनी बाइबल में इफिसियों के अध्याय में मसीह को रेखांकित कर रहे हैं, तो आपको आश्चर्य होगा कि कितनी बार मसीह का उल्लेख यीशु मसीह, मसीह या प्रभु के नाम से किया गया है। या जहाँ आपने उसे उसके लिए, उसके द्वारा संदर्भित किया है। मसीह हर जगह है।

मसीह के बिना हम ईसाई नहीं हो सकते। मसीह के साथ, हमें उद्धार मिलता है। मसीह हमारे आचरण का आदर्श है।

मसीह ने हमारे लिए अंधकार की शक्तियों पर विजय प्राप्त की है। मसीह ने सभी अंतर-जातीय शत्रुता को समाप्त कर दिया है। मसीह ने हमें एक बना दिया है।

मसीह हमारे प्रभु हैं। मैं इन अध्ययनों में हमारे साथ शामिल होने के लिए आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ। और मैं वास्तव में, इस श्रृंखला को समाप्त करते हुए, आपको उस मसीह के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ जिसके बारे में मैंने अभी बात की थी।

मसीही होने का मतलब है मसीह का अनुयायी होना। जेल के पत्रों में हमने पौलुस का पत्र देखा। फिलिप्पियों को लिखे गए उसके पत्र में उन्हें दुख में भी आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया था।

फिलेमोन ओनेसिमस के बारे में लिखते हैं और बताते हैं कि कैसे उसे प्रेम और एकता की भावना से गले लगाया जाना चाहिए। कुलुस्सियों में, वह चर्च को झूठी शिक्षाओं के खिलाफ खुद को तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह कैसे एकता और समर्थन की भावना को अपने अंदर रखता है।

और इफिसियों में, जैसा कि मैंने अभी संक्षेप में कहा। जेल की पत्रियाँ हमें याद दिलाती हैं कि जेल से भी, पौलुस का हृदय जेल में नहीं था। परमेश्वर के प्रति उसका समर्पण जेल में नहीं था।

परमेश्वर के लोगों के बीच महान चीजें देखने की उनकी इच्छा जेल नहीं थी। परमेश्वर आपकी मदद करे और आपको ज्ञान दे। परमेश्वर आपको वह बनने की शक्ति और अनुग्रह दे जो उसने आपको बनाया है।

भगवान आपको यह एहसास दिलाए कि आप ईश्वर के परिवार से जुड़े हुए हैं। जहाँ लोग भगवान का नाम पुकारते हैं, वहाँ आप ईश्वर के परिवार से जुड़े हुए हैं। ईश्वर आपको क्षमा प्रदान करे जब आपने ईश्वर के इस परिवार का हिस्सा होने के कारण दर्दनाक समय का अनुभव किया हो।

और भगवान आपको यह एहसास करने के लिए अनुग्रह और शक्ति दे। उसके बिना, हम ज्यादा कुछ नहीं कर सकते। और प्रार्थना और कृतज्ञता का हृदय आपको आकार और ढालना जारी रखे।

ईश्वर आपको वे सभी संसाधन प्रदान करे और उससे भी अधिक ताकि हम सब मिलकर उस पूर्णता तक पहुँच सकें जिसके लिए ईश्वर ने हमें बनाया है। एक बार फिर धन्यवाद। मैं व्यक्तिगत रूप से आभारी हूँ कि आपने हमारे साथ अध्ययन करना चुना है।

और मुझे उम्मीद है कि इससे मसीह के बारे में आपका ज्ञान बढ़ेगा और ईसाई होने का मतलब भी समझ में आएगा। धन्यवाद।

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह उनका अंतिम व्याख्यान है, आध्यात्मिक युद्ध पर व्याख्यान 30, इफिसियों 6:10-21।